डॉ.के.पी.शहा,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
कोल्हापूर

तथा

स्नातकोत्तर अध्यापक
एवं शोध-निर्देशक
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि मीना एच. चिले ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु - शोध प्रबन्ध डॉ. रघुवीर सिंह के भावात्मक निबन्धों का अनुशीलन मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। मीना एच. चिले के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

(डॉ.के.पी.शहा)
शोध निर्देशक

कोल्हापुर।
दिनांक : 11 : 5 : १९९३।

Head, Hindi Dept.
Shivaji University,
Kolhapur-416 004.

अ नु क्र म णि का

		पृष्ठ क्रमांक
	प्राक्कथन	1 - 4
प्रथम अध्याय	रघुवीर सिंह - व्यक्ति एवं कृतित्व	5 - 13
द्वितीय अध्याय	निबन्ध - स्वरूप, परिभाषा प्रकार - निबन्ध तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में साम्य तथा भेद	14 - 31
तृतीय अध्याय	हिन्दी निबन्ध का इतिहास	32 - 46
चतुर्थ अध्याय	डॉ. रघुवीर सिंह के भावात्मक निबंधों का परिचय	47 - 61
पंचम अध्याय	डॉ. रघुवीर सिंह के भावात्मक निबन्धों की विशेषताएँ	62 - 81
छठा अध्याय	उ प सं हा र	82 - 86
	परिशिष्ट	87 - 88

प्राक्कथन

डॉ.रघुवीर सिंह हिन्दी के भावात्मक निबन्ध लिखनेवालों में सर्वोच्च स्थान पर रहे हैं । वे ऐतिहासिकता से अधिक सम्बन्धित रहने के कारण उनके निबंधों का विषय इतिहास ही रहा है । उन्होंने गद्य-काव्य तथा गद्य-गीत की रचना की है । उनके निबन्धों में उनकी विद्वत्ता और कला-कुशलता का अपूर्व परिचय मिलता है ।

डॉ.रघुवीर सिंह जी को पढने का मौका एम.ए.की पढाई के दौरान आया था । उनका `ताज` निबंध पढकर मैं उनके साहित्य की ओर आकर्षित हो गयी । परिणामत: मेरे मन में उनपर शोध-कार्य करने की इच्छा जागृत हुई । तभी एम.फिल.के लघु-शोध प्रबन्ध के सिलसिले में उनपर शोध-कार्य करने का मौका प्राप्त हुआ ।

प्रस्तुत प्रबन्ध `डॉ.रघुवीर सिंह के भावात्मक निबन्ध` में रघुवीर जी का अंतिम ग्रंथ `शेष स्मृतियाँ` में संकलित निबन्धों का अनुशीलन भावात्मकता के संदर्भ में किया है ।

प्रबन्ध के प्रारंभ में मन में आये हुए सवाल थे --

१) निबन्ध का स्वरूप,परिभाषा क्या है ? तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में साम्य तथा भेद ?

२) हिन्दी निबंध का इतिहास

३) डॉ.रघुवीर सिंह के निबंध का परिचय

४) डॉ.रघुवीर सिंह के निबंध की विशेषताएँ कौनसी है ?

५) उनके निबन्ध में भावात्मकता का स्वरूप किस प्रकार है ?

इन सवालों का हल ढूँढने के लिए मैंने रघुवीर सिंह जी के निबन्ध में भावात्मकता का अनुशीलन करने का प्रयास किया है ।

प्रथम अध्याय में -- रघुवीर सिंह जी का जन्म तथा बाल्यावस्था, पिता, शिक्षा, नौकरी तथा साहित्यिक रचनाएँ का विवेचन किया हैं ।

द्वितीय अध्याय में -- निबन्ध का स्वरूप-परिभाषा-व्याप्ति तथा निबंध तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में साम्य तथा भेद का विवेचन किया गया हैं ।

तृतीय अध्याय में -- निबंध के इतिहास का प्रारंभ, उसका विकास का चरम और उत्कर्ष इसका क्रमानुसार विवेचन किया हैं ।

चतुर्थ अध्याय में - डॉ. रघुवीर सिंहजी के अंतिम ग्रंथ `शेष स्मृतियाँ` इसमें संग्रहीत `ताज`, `अवशेष`, `आगरा का किला`, `दिल्ली का लाल किला` तथा तीन कब्रें इन पाँच भावात्मक निबंधों का परिचय करवाया हैं । अन्य भावात्मक निबंधों की रचनाएँ उपलब्ध न होने के कारण मैंने शेष स्मृतियाँ पर ही अध्ययन किया हैं ।

पंचम अध्याय - में -- डॉ. रघुवीर सिंह जी के भावात्मक निबंधों की निबंध के तत्वानुसार तथा विषय के आधारपर विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया हैं ।

षष्ठ अध्याय -- में उपसंहार । यह लघु शोध प्रबन्ध का सार-रूप हैं । इसमें रघुवीर सिंह जी के भावात्मक निबंधों का संक्षिप्त विवेचन एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया हैं ।

इस लघु-शोध प्रबंध के अंत में परिशिष्ट दिया गया हैं । इसमें सहायक संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गयी हैं । वे ग्रंथ जो विषय विश्लेषण की आधारशिला बन सके हैं । साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशक एवं संस्करण भी दिया गया हैं ।

आज्ञा-ज्ञापन

प्रस्तुत शोध प्रबंध के निर्देशक डॉ.के.पी.शहा जी के प्रति कृतज्ञ हूँ। गुरुवर्य डॉ.शहा जी सदैव कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद स्नेहपूर्ण आशिर्वाद के साथ मुझे समय -समय पर मार्ग दर्शन करते रहे। कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी विषय के चयन से लेकर उसे टंकित रूप में प्रस्तुत करने तक योग्य परामर्श देते रहे। आपके विद्वतापूर्ण व्यासंग ने मेरे मार्ग की बाधाओं को दूर करते हुए मौलिक परामर्शो द्वारा पथ-प्रदर्शन किया हैं। आपने स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन देकर मेरा उत्साह बढाया उसके लिए मैं चिरऋणी हूँ। गुरुवर्य के ऋण से अऋण हो पाना असंभव बात हैं।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ.व्ही.के मोरे,डॉ.व्ही.व्ही.द्रवीड, प्रा.एस.बी. कणाबरकर,प्रा.आय.एम.मुजावर,प्रा.वेदपाठक,प्रा.तिवले, प्रा.हिरेमठ,प्रा.भागवत जी का अशिर्वाद मेरे साथ रहा। उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करना मेरा पूनीत कर्तव्य मानती हूँ।

माता-पिता,स्नेह एवं मित्रों की आभारी हूँ, जिनकी शुभ कामनाएँ मेरे साथ थी।

मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ,जिनकी सर्जनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोध-कार्य में किया हैं। संदर्भ ग्रंथों को उपलब्ध कराने के हेतु मैं शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर,महावीर महाविद्यालय,कोल्हापुर ,हिन्दी ग्रंथालय के अधिकारियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

अंत में इस शोध प्रबन्ध को अतिशीघ्र एवं सुवाच्य रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्रीयुत बालकृष्ण रा.सावंत जी ने किया तथा प्रबंध को साज

चढाने का काम

बडी आत्मीयता से किया इनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखती हूँ ।

आपकी कृपापार्थी

Mhile

(कु.मीना हरी चिले)

शोध छात्रा

कोल्हापूर :

दिनांक : : :१९९३ ।